



जापानी & उज्जूनी 2021

l a knd dh dye ls

हेलो दोस्तों

मैं हूँ तनवीर आपका बाल संपादक। सभी बाल साथीयों को बहुत – बहुत शुभकामनाएँ कि इस लॉकडउन के दौरान सभी साथीयों ने कब्ल के अंतरगत होने वाली सभी चित्रकला, रचनात्मक लेख और कविता लेखन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हमारे कई साथीयों ने पुरुस्कार भी जीते और जो साथी पुरुस्कार नहीं जीत सके उनका प्रदेशन भी काफी प्रशंसनीय है।

हम कब्ल के बच्चों ने “अपने पर्यावरण की रक्षा कैसे करें” विशय पर एक निबंध लेखन प्रतियोगिता में भाग लेकर दमूलमंत 2021 का स्वागत करते हैं और हम अपने पर्यावरण की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाने का वचन देते हैं ताकि हम सभी ताजी हवा में सांस ले सकें और स्वस्थ जीवन जी सकें।

तो चलिए हमारे दोस्तों के द्वारा लिखे गए सभी सुंदर निबंधों की झलक देखते हैं।

i ; kɔj . k dk l j {k k gj , d Q fDr fd ft Fenkjh

व्यक्ति अपने पर्यावरण में निवास करता है। वह अपने पर्यावरण का एक हिस्सा होता है। पर्यावरण में होने वाली सभी गतिविधियों से वह बहुत प्रभावित होता है। इसलिए यह जरुरी है कि पर्यावरण साफ सुथरा रहें। पर्यावरण में किसी प्रकार का असंतुलन उत्पन्न न हो। दुर्भाग्यवश कई कारणों से वर्तमान समय में हमारे पर्यावरण में असंतुलन स्थिती उत्पन्न हो गई है। जल, वायु, मिटटी, वन जैसे प्राकृतिक तत्व प्रदूषित हो रहे हैं। इसका परिणाम है कि जलवायु में परिवर्तन, जैव विविधताओं के लिये संकट, बाढ़, सूखा और स्वास्थ्य संबंधित अनेक समस्याएँ। अतः हमें अपनी गतिविधियों को नियंत्रित करना होगा जो पर्यावरण को तरहा तरहा से हानि पहुँचाएँ। हमें अपने वातावरण को शुद्ध रखना होगा। हमें जल और वायु को शुद्ध बनायें रखने के लिये प्रयास करने होंगे। वनों को नष्ट होने से रोकना होगा तथा वन्य जीवन को संरक्षित करने के भी प्रयास करने होंगे। अपने पर्यावरण को साफ—सुथरा रखना हर व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए।



gekj k i ; kɔj . k

By Shivani (Angaza foundation)

हमारे चारों तरफ जो कुछ हैं तथा जो हमें घेरे हुए हैं उसे हम हमारा पर्यावरण कहते हैं। इसमें जैविक, अजैविक, प्रकृतिक और मानव निर्मित वस्तुएँ आती हैं। प्रकृतिक पर्यावरण में पेड़, ज्ञाड़िया, बगीचा, नदी, झील, हवा इत्यादि शामिल हैं। प्रचीन काल में मानव प्राकृति के समीप निवास करते थे। इसी कारण वह ज्यादा स्वस्थ्य रहते थे और ज्यादा वर्षों तक जीवित भी रहते थे। परन्तु आज हमारे चारों तरफ दूषित वातावरण हैं जिसकी वजह और कोई नहीं बल्कि हम खुद हैं। इमारतें, वाहन, सड़कों पर खतरनाक गैस, घर से रेफरीजिरेटर व ऐयरकंडिशन से निकलने वाली गैसें इत्यादि। प्रकृति में जो कुछ भी उपस्थित हैं वे सभी हमारे लिये लाभदायक हैं इस लिए प्रकृति से छेड़ छाड़ करके हम कुछ आराम तो पा सकते हैं लेकिन आगे आने वाली पीढ़ी के लिये मुसीबत खड़ी कर सकते हैं।





i ; kɔj.k

सायमा

पर्यावरण का मतलब प्रकृतिक परिवेश जैसे: जल, भूमि, वायु, पशु—पक्षी, जंगल तथा ठोस सामग्री इत्यादि हैं। स्वस्थ वातावरण प्रकृतिक संतुलन बनाये रखता हैं साथ ही साथ प्रथमी पर जीवन को बढ़ावा भी देता है। परन्तु अब तकनीकी उन्नती से प्रकृतिक वातावरण में बिगड़ पैदा हो रहा हैं जिसके परिणाम स्वारूप जल, वायु और धनी प्रदूषण दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। ये सब अभी तो हमारे लिये हानीकारक हैं ही साथ ही साथ आगे आने वाली पीढ़ी के लिए भी खतरा हैं। हम सभी की ये ज़िम्मेदारी हैं कि प्रकृति को किसी प्रकार से हानि ना पहुंचायें और वातावरण को शुद्ध रखने के लिये ज्यादा से ज्यादा वृक्षारोपण करें।

i ; kɔj.k l ʃ{lk

सबिया – नवज्योति इण्डया फाउन्डेशन

पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना ही पर्यावरण संरक्षण हैं। पर्यावरण संरक्षण का मुख्य उद्देश्य पर्यावरण और प्रकृतिक संसाधनों कि रक्षा करना है। आज के युग में हम विकास के नाम पर पर्यावरण को लगातार चोट पहुंचा रहे हैं। अब हम इस स्थिति में पहुंच चुके हैं कि पर्यावरण के संरक्षण के लिये ठोस कदम उठाने होंगे ताकि हम अपने वातावरण को शुद्ध रख सकें। अगर कारखानों से निकलने वाली गैसें, कचरा और गंदे पानी को नियंत्रित किया जा सके तो वायु और जल को दूषित होने से काफी हद तक बचाया जा सकता है। हमें पर्यावरण को संरक्षित करने के लिये वृक्ष भी लगाने होंगे और साथ ही साथ जंगलों को कटने से रोकना होगा।

oKkud xfrfot/k kW

vks i ; kɔj.k

यासमीन – नवज्योति इण्डया फाउन्डेशन

पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं ‘परि’ और ‘आवरण’ यहा पर परि का अर्थ हैं ‘चारों ओर’ और आवरण का अर्थ हैं ‘धेरे हुए’ हमारे चारों ओर फैले हुए आवरण को हि पर्यावरण कहते हैं। दूसरे शब्दों में मानव, वनस्पति, पशु—पक्षी, सभी जैविक और अजैविक घटकों को पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण में जितना महत्व मनुष्य का हैं उतना ही महत्व अन्य जीव—जन्तुओं का भी हैं।

वैज्ञानिक गतिविधियों के कारण पर्यावरण संतुलन बिगड़ रहा हैं और दूसरी तरफ शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के नाम पर वनों को काटा जा रहा है। जिससे हमारा पर्यावरण और भी खतरें में आता जा रहा है। हमें को वन संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। वन हमारे पर्यावरण के संरक्षण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हमारे देश में वन संरक्षण के लिये कानून भी हैं जिससे वनों को संरक्षित करने में काफी मदद मिली है। इसके साथ—साथ पर्यावरण के संरक्षण के लिये लगभग हमारी सभी औंधोगों के लिये मानक भी तय किये चुके हैं जो वातावरण कि गुणवत्ता बनाये रखने में काफी महत्वपूर्ण हैं।

geəvius i ; kɔj.k fd j {lk djusfd t #jr D; kaga

संजीव

प्राणी अपने जीवन हेतु वनस्पति जगत पर आश्रित हैं। मनुष्य हवा में उपस्थित ऑक्सीजन को सॉस द्वारा ग्रहण करके जीवित रहता है। पेड़—पौधे प्रकाश संश्लेषण कि प्रक्रिया के दौरान ऑक्सीजन वातावरण में छोड़ते हैं। हमें अपने वातावरण को शुद्ध रखने के लिये ठोस कदम उठाने होंगे अन्यथा हमें और हमारे आने वाली नस्लों को इसके दुष प्रभावों को झेलना होगा।

i ; kɔj.k dh j {lk djusdh vlo'; drk D; ka

अंजली – नव ज्योति इण्डया फाउन्डेशन

पर्यावरण की सुरक्षा हमारी ज़िम्मेदारी हैं। आज जंगल कटते जा रहे हैं और हमारे वातावरण में शुद्ध हवा दुर्लभ हो गई हैं। जल भी दूषित हो रहा है। बहुत सारे वन्य जीव विलुप्त होते जा रहे हैं। उधयोगिकरण ने खेतों और जंगलों को निगल लिया है। कारखानों से निकलने वाली खतरनाक गैसें वायु को प्रदूषित करती हैं।

पर्यावरण को संरक्षित करने कि शुरुआत हमसे होती है। हमारी ज़िम्मेदारी हैं कि हम अपने आस—पास साफ सफाई रखें, कोई भी ऐसा काम न करें जो हमारे वातावरण को हानी पहुंचाता है—जैसे ऐयरकंपंडीशन को ज्यादा न चलाना, अपने निजि वाहन का इस्तिमाल न करके पब्लिक कनवियन्स का इस्तिमाल अधिक से अधिक करना आदि।

पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य हैं कि हम अपने चारों तरफ के वातावरण को संरक्षित करें तथा उसे जीवन के अनुकूल बनाए रखें। पर्यावरण और प्राणी एक दूसरे पर आश्रित हैं पर्यावरण कि रक्षा करना मतलब अपने आप को सुरक्षित करना है।

i ; kɔj.k fd l ʃ{lk gekjh ft fEenkjh

पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना हैं ‘परि+आवरण’। यहा पर परि का अर्थ हैं ‘चारों तरफ’ और आवरण का अर्थ हैं ‘धेरा’ यानी प्रकृति में जो भी हमारे चारों ओंर हैं जैसे वायु, जल, मृदा, पेड़, पौधे और आदि सभी पर्यावरण के अंग हैं। इन्ही से हमारे पर्यावरण कि संरचना हुई है। प्रकृति के प्रति हमारा अमानवीय व्यवहार इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि हम पर्यावरण के प्रति कितने उदासीन और संवेदन शुन्य हैं।

आज हमारे पास शुद्ध पय जल का अभाव है, सर्दियों में दिल्ली और आस—पास के राज्यों कि हवा जहरीली हो जाती हैं जो आगे चलकर गम्भीर बीमारीयों का कारण बनेगी। जंगल कटते जा रहे हैं। और शुद्ध जल के स्रोत नष्ट होते जा रहे हैं। कुछ वन्य जाति भी विलुप्त होती जा रही हैं। और गोपिकिकरण ने खेतों और वनों को ऐसी इमारतों में तबदील कर दिया हैं जो हनीकारक गेंसे वातावरण में छोड़ रही हैं। हमें अपने वातावरण को शुद्ध रखने के लिये ठोस कदम उठाने होंगे अन्यथा हमें और हमारे आने वाली नस्लों को इसके दुष प्रभावों को झेलना होगा।





gekjsvkl & i kl fd l kQ & l QkbZ

जीवन कि रक्षा के लिये पृथ्वी का संरक्षण अति आवश्यक है। वायु, जल, और मृदा प्रदूषण हमारे पर्यावरण को काफी प्रभावित कर चुके हैं। हमें व्यक्तिगत रूप से चिंतन करने कि आवश्यकता है। हमें अपने स्तर पर जिम्मेदारी लेने कि ज़रूरत है। ताकि हम पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे सके जैसे हम अपना घर और आस-पास को साफ रखें, पोलिथीन य कोई भी ऐसी वस्तु का इस्तमाल ना करे या कम से कम करे जो हमारे वातावरण को नुकसान पहुचाती हैं और हमें ये भी समझना चाहिए कि पर्यावरण के संरक्षण के लिए वनों का संरक्षण अति आवश्यक है।

i ; kbj . k l j {k k vks t kx#drk

पूजा

आज कल कि गतिविधियों से पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँच रहा है। वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धूँआ हमारे वातावरण में हानीकारक गैसे छोड़ता हैं जो फेफड़े और हृदय रोगों का कारण बनता है। हमें नालीयों में घरों का कचरा नहीं फेकना चाहिये यह जल प्रदूषण का कारण बनता है क्योंकि ये कचरा नदियों में मिलता है और यही पानी हम पीते हैं जोकि कई बिमारीयों का कारण बन सकता है। वनों का कटना और कुछ वन्य प्रजातियों का लुप्त होना पर्यावरण के लिए एक खतरा है ये हमारे पारितंत्र को नुकसान पहुचाता हैं। हमें आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण के लिए हर व्यक्ति को जागरूक होना चाहिए।

gekj k i ; kbj . k

मरजीना – नई दिशा

व्यक्ति अपने पर्यावरण में निवास करता है। वह भी अपने पर्यावरण का एक हिस्सा होता है। पर्यावरण में होने वाली विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से वह बहुत प्रभावित होता है। इसलिए ज़रूरी है कि हमारा पर्यावरण साफ- सुथरा रहें। पर्यावरण में किसी प्रकार का असंतुलन उत्पन्न न हो।

दुर्भाग्यवश कई कारणों से वर्तमान में हमारे पर्यावरण में काफी असंतूलन आ चुका है। जल, वायु और मृदा अब दूषित हो चुके हैं। इसके परिणामस्वारूप जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता के लिए संकट, बाढ़, सूखा और स्वस्थ्य से संम्बंधित कई समस्याएँ आ रही हैं। अतः हमें अपनी उन गतिविधियों पर नियंत्रण करना होगा जो हमारे पर्यावरण को हानि पहुँचाती हैं। हमें जल और वायु को शुद्ध रखने के लिए प्रयास करने होंगे, वनों को नष्ट होने से रोकना होगा तथा वन्य जीवों का संरक्षण करना

होगा। पर्यावरण का संरक्षण करना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी होनी चाहिए।

LkQ&l QkbZdk egRro

आस-पास के वातावरण साफ-सुथरा हों तो किसे अच्छा नहीं लगता है। स्वच्छ और साफ जगहा सभी को भाती हैं। इसमें नगर निगम और सफाई कर्मीयों का बहुत योगदान होता है। वे तो अपनी तरफ से पूरा योगदान देते ही हैं परन्तु कुछ गेरजिम्मेदार लोग कचरा फैलाने और गंदगी करने से बाज नहीं आते हैं। हम अपने आस-पास कि सफाई के लिए नगर निगम के सफाई कर्मीयों पर निर्भर नहीं होना चाहिए। हमें अपने आस-पास कि सफाई कि स्वयं ही जिम्मेदारी लेनी चाहिए। ताकि हम खुद भी स्वस्थ रहें और अपने वातावरण को भी स्वच्छ रख सके। हमें अपने घर को रोज़ साफ करना चाहिए ताकि घर में कूड़ा जमा न हो। इस तरह हम घर के अंदर हानीकारक किटाणु और विषाणु को पैदा होने से रोक पाते हैं।



i ; kbj . k vks i zdfrd l a kku

रुबी – नई दिशा

पर्यावरण का संबन्ध उन सभी जीव और निर्जिव चिजों से हैं जो कि हमारे आस-पास उपस्थित हैं और ये हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसके अन्तर्गत वायु, जल, मृदा, पेड़-पौधे, जीव और जन्तु आदि आते हैं। हालाकि एक कस्बे, शहर या गाँव में रहते हुए हम देखते हैं कि हमारे आस-पास का वातावरण और स्थान वास्तव में एक प्रकृतिक स्थान जैसे कि रेगिस्थान या जंगल या फिर एक नदि आदि से जिन्हें हम मनुष्य ने अपने उपयोग के लिए इमारतों, सड़कों और कारखानों में बदल दिया है। नवकरणीय संसाधन यानि वो संसाधन जिन्हें प्रकृति से पुनः प्रप्त किया जा सकता है जैसे वनस्पती, पानी और वायु आदि लेकिन कुछ संसाधन ऐसे भी हैं जो मानव जीवन के लिए अति आवश्यक हैं परन्तु इनका अत्यन्त उपभोग एक असंतुलन उत्पन्न कर सकता है। जो कि हमारे वातावरण को खराब कर सकते हैं जैसे वनों का नष्ट होना, पीने के पानी

के स्रोतों का नष्ट होना आदि। इसलिए वातावरण को संरक्षित करने के लिए प्रकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत आवश्यक है।

' kq gok vks l kQ i kuh

भगवती – नई दिशा

पर्यावरण को संरक्षित करने कि इस लिए ज़रूरत है क्योंकि हमें शुद्ध हवा, पानी और वातावरण चाहिए। लेकिन आज लोग अपनी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पर्यावरण संरक्षण को भूल गए हैं। ये सोचे बिना कि पर्यावरण को पेड़ों के कटने से कितना नुकसान पहुचेगा हम पेड़ों को काट रहे हैं। पेड़ों के काटने से वातावरण में ऑक्सीजन कि कमी होती है। प्लास्टिक के जलाने से खतरनाक गेंसे वातावरण में मिल जाती हैं जो कि मानव जाति के लिए खतरनाक हैं और ये हमारे वातावरण को दूषित भी करती हैं।

geav i us i ; kbj . k dkspuk pkfg,

संजना – कक्षा 8वी

हमें अपने पर्यावरण को इस लिए बचाना चाहिए क्योंकि हमारे ज़रूरत कि सभी चीज़े हमें इसी से मिलती हैं। अगर किसी कारण पर्यावरण प्रदूषित होता है तो इसका सबसे बुरा प्रभाव हम पर ही होता है। हम अपने पर्यावरण पर पूर्ण रूप से निर्भर हैं और हमारे जीवन की गुणवत्ता हमारे वातावरण कि गुणवत्ता पर निर्भर करती है। हमें अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सभी अथक प्रयास करने चाहिए।

i ; kbj . k vks ge

हरी मंडल – कक्षा 8 वी

हमारे वातावरण में कई चीज़े उपस्थित हैं जैसे पशु-पक्षी, जीव-जन्तु और पेड़-पौधे। आज हमारी वजह से वातावरण नष्ट होता जा रहा है। हमारी ज़रूरतों के लिए हम पेड़-पौधों को काटा जा रहा है। ये हमें ऑक्सीजन देते हैं। वातावरण को शुद्ध रखने में इनका महत्वपूर्ण योगदान होता है। वाहनों और कारखानों से निकलने वाला धूँआ वायु प्रदूषण को बढ़ाता है वही कारखानों से निकलने वाला केमिकल और नालीयों के द्वारा घरों से निकलने वाला कचरा जल को प्रदूषित करता है।

पृथ्वी पर जब जीवन की शुरुआत हुई थी तब जीव-जन्तुओं कि बहुत सारी प्रजातियां हुआ करती थी लेकिन आज कुछ प्रजातियां लप्त हो चुकी हैं। और कुछ लुप्त होने कि कगार पर हैं। इनके लुप्त होने का एक कारण हमारे वातावरण में असंतुलन है। अब हमें अपने पर्यावरण को संरक्षित करने कि आवश्यकता है।

i ; kजे.k cpluk D; kavlo' ; d gः

रोली – नई दिशा

पर्यावरण का मतलब हैं सभी प्रकृतिक परिवेश जैसे कि मृदा, वायु, जल, पौधे, पेड़, जीव—जन्तु, ठोस सामग्री और वन आदि। स्वस्थ वातावरण प्रकृति के संतुलन को बनाए रखता हैं और साथ ही साथ पृथ्वी पर उपस्थित सभी जीवित चीजों के सही से विकसित होने में मदद करता हैं। हलाकि नई तकनीक और मानव निर्मित चीज़े आज हमारे वातावरण को काफी नुकसान पहुँचा रही हैं और ये हमारे जीवन के साथ—साथ भविष्य में जीवन को भी खतरे में डाल रही हैं। यदि हम प्रकृति के अनुशासन के खिलाफ कुछ भी करते हैं यह वायुमण्डल, जलमण्डल और रथलमण्डल को प्रभावित करता हैं जिससे मानव और अन्य जीवों का जीवन भी प्रभावित होता हैं। प्राकृतिक वातावरण के साथ मानव निर्मित वातावरण भी हमारे पर्यावरण का हिस्सा हैं इसमें इमारतें, सड़क आदि हैं। मानव निर्मित वातावरण प्रकृतिक वातावरण को प्रभावित करता हैं। प्रकृतिक वातावरण के घटक संसाधनों के रूप में उपभोग किये जाते हैं और यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इनका शोषण किया जाता है।



विश्व पर्यावरण संरक्षण दिवस प्रति वर्ष 5 जून को एक उत्सव कि तरह मनाया जाता है। जो कि विश्व स्तर पर प्रत्यक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूक करता हैं इस दिन वृक्षारोपण भी किये जाते हैं। दुरभाग्यवश हमारे देश के नागरिकों का कल्पना हैं कि पर्यावरण संरक्षण सरकार के स्तर का काम हैं इसमें आम आदमी कि कोई भूमिका नहीं होती है। परन्तु ऐसा नहीं हैं प्रत्यक व्यक्ति अपने स्तर पर वे सारे कार्य करके जिससे कि हमारे पर्यावरण का संरक्षण होता हैं अपना पूर्ण योगदान दे सकता हैं।

26 t uojh 2021 dkx. krä fnol ds mRl o dks fpfär djus ds fy,] frrfy; k&vk[kyk
eMh dæ ds cPpkus bl ds ckjs eal qj fp= vkʃ dfork ; çLrq dhA





, d l Igjh ; k=k

किरण – कक्षा: 9वीं, दीपालय

गर्मी की छुट्टीयों में, इस बार मैं गांव गई थी। मैं बहुत सालों के बाद गांव जा रही थी। इससे पहले जब मैं सात साल कि थी तब मैं गांव गई थी। मुझे मेरा गांव बहुत पसंद है। मेरा गांव बहुत हरा-भरा है। जब भी मैं यहाँ आती हूँ मुझे दो बातें हमेशा याद आ जाती हैं। पहला जब मैं छोटी थी तब मैं अपनी मम्मी-पापा के साथ आया करती थी। कुछ पैसे बच जाये इस लिये मेरे मम्मी-पापा मुझे खेतों के रास्ते ले गये। खेतों के रास्ते से मेरे दादा जी का घर लगभग 2 किमी• दूर था। अब आप ही सोचो कि एक सात साल की लड़की बरसात के मोसम में 2 किमी• दूर केसे चल पायेगी। होना क्या था कभी बायें



तरफ लुढ़कती कभी दायें तरफ पर मैंने खुद को सम्माल लिया था। लगभग हम घर पहुँचने ही वाले थे कि मेरा पैर गीली मिट्टी में धस गया और मैं थपाक से गिर गई। मेरे मम्मी-पापा मुझ पर ज़ोर-ज़ोर से हसने लगे। वे हसने में इतना व्यस्थ हो गये कि मुझे उठाना भी भूल गये। मुझे खुद ही उठाना पड़ा। सोचो भला इतना अत्याचार कोई करता हैं क्या? एक तो मुझे खेत के रास्ते लये वो भी बरसात में दों खेतों के बीच जो पतला सा उठा रास्ता होता हैं उस पर चलना था। सामान्य बात हैं कि मैं गिरती ही। उसी घटना के एक-दों दिन बाद वहाँ बहुत तेज़ वर्षा हुई और मैं फिर से गिर गई। क्योंकि मेरे दादा जी का घर आधा मिट्टी और आधा सीमेंट का बना हुआ है। बच्चे अगर एक भी दिन उछल कूद ना करे तो उनका मन नहीं भरता हैं। मैं भी वहा खेल रही थी और मेरा पैर गीली मिट्टी पर पड़ा और मैं फिसल गई। इस बार मुझे ज्यादा बुरा लगा। क्योंकि घर के सभी सदस्यें मुझ पर हसने लग गए। लेकिन जो भी हों। अगर मेरे गिरने से सभी लोग हसने लगे वो भी एक साथ इससे ज्यादा खुशी कि बात मेरे लिये और क्या हो सकती हैं। आज कल एसा बहुत ही कम देखने को मिलता हैं कि कोई घटना पूरे परिवार के लिए एक साथ हसने का कारण बनें।

अब मैं सात साल बाद गांव आई थी और अब एक छोटी लड़की बड़ी हो चुकी थी। मुझे मेरी बूँदों अपने घर ले जाने के लिये दादा जी के घर आई थी। मैं खुशी-खुशी उनके साथ चल दी। कुछ दिन बीतने के बाद, वह मुझे अपने साथ गांव के प्रसिद्ध बाज़ार (झुकरा बज़ार) में ले गई। वहा बहुत भीड़ थी वह मुझे बता रही थी कि यहाँ पर सब कुछ मिलता है। हम अंत में सब्जियाँ खरीदने के लिये, दूसरे मोढ़ पर चले गए। वहा सड़क पर ही सब लोग चटाई बिछा कर सब्जियाँ बेच रहे थे। बहुत शोर-शराबा था कोई बोलता था 20 रुपये किलो टमाटर 20 रुपये किलो, कोई बोलता था आलू ले लो आलू। सब सामान्य था। परन्तु चार औरतों के बीच में एक बूढ़ी सी दादी भी बेठी थी। वह बहुत ज्यादा पतली थी और एक कंकाल जैसी दिख रही थी। उनके कान काफी लम्बे-लम्बे थे और उनके गाल भी लटके हुए थे। उनकी सारी हड्डीयाँ दिख रही थी। एसा लगता था कि उनकि उम्र लगभग 80 से 85 वर्ष होगी। मुझे यह नहीं समझ आ रहा था कि इतनी ज्यादा उम्र होने के बावजूद वह सब्जियाँ क्यों बेच रही थी। क्या उनके घर में कोई नहीं रहता? या वह समझ चुकी थी कि आत्मर्निभर होना कितना ज़रूरी हैं। उन्हें देख कर मुझे यह सीख मिली कि हमें कभी भी हार नहीं मानना चाहिए और सदैव खुद पर निर्भर होना चाहिए।



t hou dh vk' lk dkj kik o\$! hu

नम मोहिनी – कक्षा 10वीं, दीपालय

कोरोना वायरस क्या हैं—कोरोना वायरस का संबन्ध वायरस के ऐसे परिवार से हैं जिसके संकरण से जुकाम से लेकर सांस लेने में तकलीफ हो सकती हैं। इस वायरस का संकरण चीन से शुरू होकर, सारी दुनियाँ में फेल गया और भरत को भी अपनी चपेट में ले लिया। अब लोग जिस चीज़ का इन्तज़ार कर रहे थे वो थी कोरोना वेक्सीन। अब उम्मीद नजर आ रही हैं कि वेक्सीन जल्दी ही प्राप्त होगी। क्योंकि भारत बायोटेक कि बनाई हुई वेक्सीन का तीसरे चरण का परिक्षण किया जा रहा है। जल्द ही ये जनता के लिये उपलब्ध होगी। डोक्टर हर्षवंधन ने भी जानकारी दी हैं कि वेक्सीन जल्द ही उपलब्ध होगी। वेक्सीन कि हमें आवश्यकता है। हसके आने से छात्र फिर से स्कूल जा सकेंगे और रुकी हुई आवश्यक गतिविधियाँ पुनः शुरू हो सकेंगी।

dkj kik ok j l dk i zko

हेमा – कास्प दिल्ली

मेरा नाम हेमा हैं और मैंने अभी 12 वीं पास कि हैं। और मैं कास्प दिल्ली कि तरफ से कोरोना के बारे में कुछ बताना चाहती हूँ। कोरोना महामारी में बहुत सारी समस्या का सामना करना पड़ा था। कोरोना से बचने के लिये लोगों ने मास्क और सेनेटाइज़ेर का प्रयोग किया। कोरोना काल में ज्यादा से ज्यादा समय लोगों ने घर में रहकर गुज़ारा। कोरोना कि वजह से बहुत सारे बच्चों को पढ़ाई में बहुत परेशानीयों का सामना करना पड़ रहा है। कोरोना काल में हमने अपनी गली का गेट बन्द कर दिया था ताकि कोई बाहर का व्यक्ति अंदर ना आये। कोरोना काल में बहुत सारी सावधानीयाँ बरतने की ज़रूरत हैं।

dkj kik dky j kt xkj fd ekj

सोनी कनोजिया – कक्षा 9वीं

भारत में एक वायरस आया जिसका नाम हैं कोरोना इसका प्रकोप लगभग पूरे विश्व में रहा है। इसके कारण सभी देशों को काफी नुकसान पहुँचा है। कुछ परिवार कोरोना से बेहाल रहे तो कुछ

बेरोज़गारी से। मैं मदनपुर खादर में रहती हूँ। यहा पर ज्यादातर लोग रहड़ी-पटरी वाले हैं। कोरोना के समय न तो काफी लोगों के पास रोज़गार रहा न ही पैसे कमाने का कोई स्रोत। इस वजह से लोगों को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ा। यहा तक कि कभी—कभी उन्हें भूखा भी सोना पड़ा। लेकिन अब समय फिर करवट ले चुका है। देश अनलॉक हो रहा है। लोगों का काम धीरे-धीरे फिर से चलना शुरू हो गया है। और खुशहाली फिर से लोट रही है।

dkj kik

मिलकर कोरोना को हराना है।
घर से हमें कही नहीं जाना है।
हाथ किसी से नहीं मिलाना है।
चहरे से हाथ नहीं लगाना है।
बार-बार अच्छे से हाथ धोने जाना है।
सेनेटाइज़ेर करके देश को स्वच्छ बनाना है।
बचाव ही इलाज हैं सभी को ये समझाना है।
कोरोना से हमको नहीं बराना है।
सावधानी रखकर कोरोना को मिटाना है।
देशहित में सभी को यह कदम उठाना है।

^vkj ; k i kj^ & fdl ku vks l jdkj

अमोन – कक्ष 8वीं, दीपालय

आप सभी जानते हैं कि हमारे देश का किसान कितना लाचार है। छोटे किसानों को बैंक या किसी व्यक्ति से उधार लेने कि सदेव आवश्यकता होती है। जब ये किसान इस लोन को चुका नहीं पाता है। तो वह आत्महत्या कर लेता है। हमारी सरकार ने तीन कृषि कानून बनाये हैं। सरकार का यह मानना है कि इन तीनों कानूनों से किसानों को बहुत मदद मिलेगी और ये तीनों कानून किसानों कि आय बढ़ाने में भी सहायक होंगे। लेकिन कुछ किसान समुहों को इन कानूनों को लेकर कॉफी नाराज़गी हैं। अपनी नाराज़गी वे धरना प्रदर्शन के रूप में व्यक्त कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि सरकार इन कानूनों को वापस ले। सरकार को लगता है कि वह अपनी जगह पर सही हैं और किसानों को लगता है कि वे सही हैं। दोनों अपनी ज़िद पर हैं। कोई भी पीछे हटने को तेयार नहीं हैं।

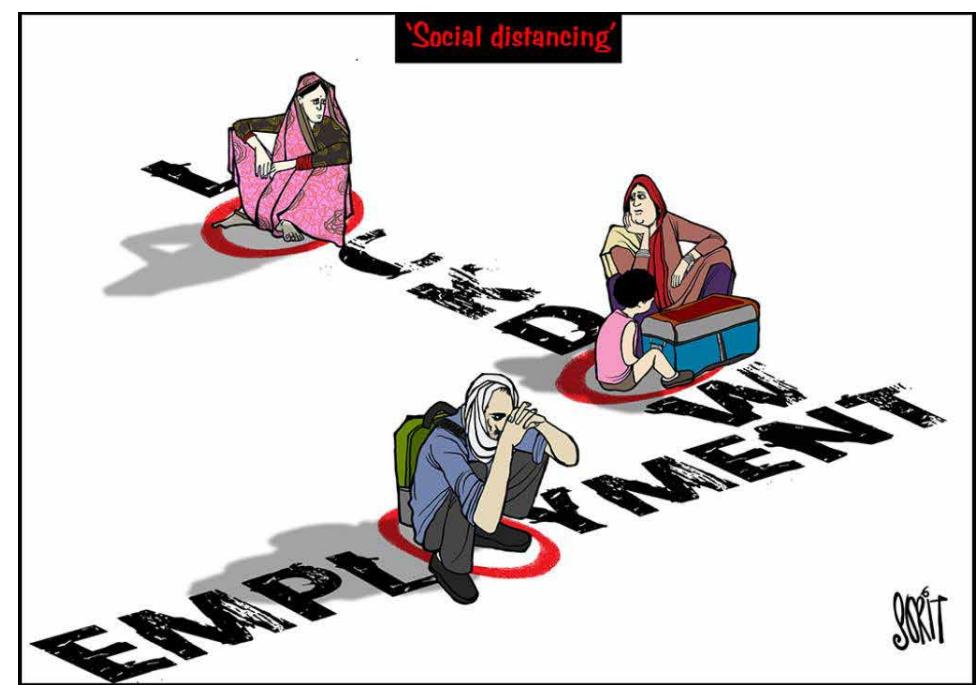


cMZ¶ywixfr ij igkj

अभिशेक – कक्षा 10वीं, दीपालय

भारत के चार राज्यों में बर्ड फ्लू के मामले सामने आये हैं और इनकी पुष्टी भी हो चुकी है। साथ ही साथ कुछ और राज्यों से भी बर्ड फ्लू के मामले आने कि आशंका है। सरकार एक कमेटी का गठन कर चुकी हैं जो हालात का जायज़ा लेने जा चुकी है। इस समय कोरोना वायरस का संक्रमण फेला हुआ है और बर्ड फ्लू संकरमण कि मार दोहरा संकट पेदा कर रही है। अगर विशेषग्रन्थों कि माने तो कोरोना वायरस और बर्ड फ्लू के वायरस में काफी समानता है। यह वायरस पक्षियों के साथ-साथ मानव शरीर को संक्रमित करने कि क्षमता होती है। भृष्णु वायरस (बर्ड फ्लू वायरस) अब तक का सबसे खतरनाक वायरस साबित हुआ है। बर्ड फ्लू के इलाज के लिये एन्टीवायरल दवा के साथ-साथ प्रयाप्त आराम और पोष्टिक आहार बहुत आवश्यक है। इस फ्लू के संक्रमण को रोकने के लिये संक्रमित व्यक्ति को एकांत में रखना चाहिए। यह बिमारी संक्रमित मुर्गीयों या पक्षीयों के नज़दीक जाने से भी हो सकती है। यानि किसी भी व्यक्ति के संक्रमित पक्षी या मुर्गी के डायरेक्ट या इनडायरेक्ट कोन्टेक्ट में आने से संक्रमित होने कि सम्भावना होती है। बुखार, सिर का दर्द, कफ, जुकाम और गले में सूजन आदि बर्ड फिल्फ्यू के लक्षण हैं।

?kj eaf' klk d\$ h ifj{kk & सरकार कि तरफ से एक बड़ा फेसला लेते हुए लॉकडाउन के दोरान परिक्षा लेने कि हरी झंडी दे दी गई। ग्रह मंत्रालय ने हायर एज्यूकेशन सैकटरी को पत्र लिखते हुए विश्वविद्यालय और स्कूलों में परिक्षा कराने कि अनुमति दी। ग्रह मंत्रालय कि तरफ से कहा गया कि यू० जी० सी० के दिशा निर्देश के अनेसार अंतिम परिक्षा मई से जून तक होंगी जोकि परिक्षा केंद्रों पर ही होगी। हम बच्चों का ऑनलाइन क्लास चल रहा है। हमें ऑनलाइन क्लास में पड़ना बहुत अच्छा लगता है। लेकिन अगर ऑनलाइन क्लास में कोई समस्या आती हैं तो हमें बहुत परेशानीयों का सामना करना पड़ता है। इससे हमारी पढ़ाई में एक रुकावट आ जाती है। वो बच्चे जिनके पास स्मार्ट फोन नहीं हैं। उन लोगों कि पड़ाई तो मानो रुक ही गई हैं। और इन सभी बच्चों कि परिक्षाएं केन्द्रों पर ही होंगी।



'ykwMkmu vks cjs kt xkj h'

अंकित – कक्षा 9वीं, दीपालय

कोरोना काल में बेरोज़गारी एक बड़ी समस्या है। लॉकडाउन में सारी गतिविधियां बंद हो गई थीं इसलिए सारे काम भी ठप हो गये थे। इस दोरान काफी सारे लोग बेरोज़गार हो गये थे। पैसे खत्म होने कि वजह से खाने का इन्तज़ाम करने में भी परेशानीयां आने लगी। जो लोग अमीर थे उनको ज्यादा परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा परन्तु वे लोग जो रोज़ कमाकर घर का गुज़ारा कर रहे थे। लॉकडाउन होने से उन्हें बहुत समस्याओं का सामना करना पड़ा ऐसा लगता था जैसे कि उन पर दुखों का पहाड़ टूट गया हो। सरकार ने भी अपनी तरफ से काफी मदद कि लेकिन कुछ लोगों तक यह मदद नहीं पहुँच सकी। बहुत सारे लोग जो अपने घरों से दूर काम करने आये हुए थे वो वहा आकर फस गये। क्योंकि लॉकडाउन कि वजह से कोई वाहन नहीं चल रहा था। इसलिए उन्हें अपने घर का सफर पेदल ही तय करना पड़ा। वही कुछ लोगों ने इस समस्यां का डट कर सामना किया और वे अपने घरों को वापस नहीं लोटे। अनलॉक प्रक्रिया के साथ-साथ कुछ लोग अपने काम पर वापस जाने लगे हैं। लेकिन बहुत सारे लोग अभी भी बेरोज़गार हैं।

dkj kjk dk f' klk ij i Hko

आवेश कुमार – कक्षा 10वीं, दीपालय

शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक नागरिक का एक मूल अधिकार है। एक शिक्षित व्यक्ति अपनी शिक्षा के दम पर अपने जीवन का निर्माण करता है। कोरोना का शिक्षा पर काफी असर पड़ा है। इस महामारी कि वजह से शिक्षा प्रणाली में असमानता बढ़ गयी है। इस महामारी में निम्न आये वाले देशों कि कमज़ोर एवं संवेदनशील आबादी काफी प्रभावित हुई हैं। एक आकड़े के अनुसार इस आबादी के अधिकांश बच्चे स्कूल से बाहर हो गये हैं और एक आकड़े के अनुसार भारत में लॉकडाउन कि वजह से 32 करोड़ क्षात्रों कि शिक्षा प्रभावित हुई जिसमें 15.5 करोड़ लड़कियां और 16.5 करोड़ लड़के सम्मिलित हैं। अगर इसको दुनियां के स्तर पर देखा जाये तो 193 देशों में 132 करोड़ छात्रों कि शिक्षा इस महामारी से प्रभावित हुई है।

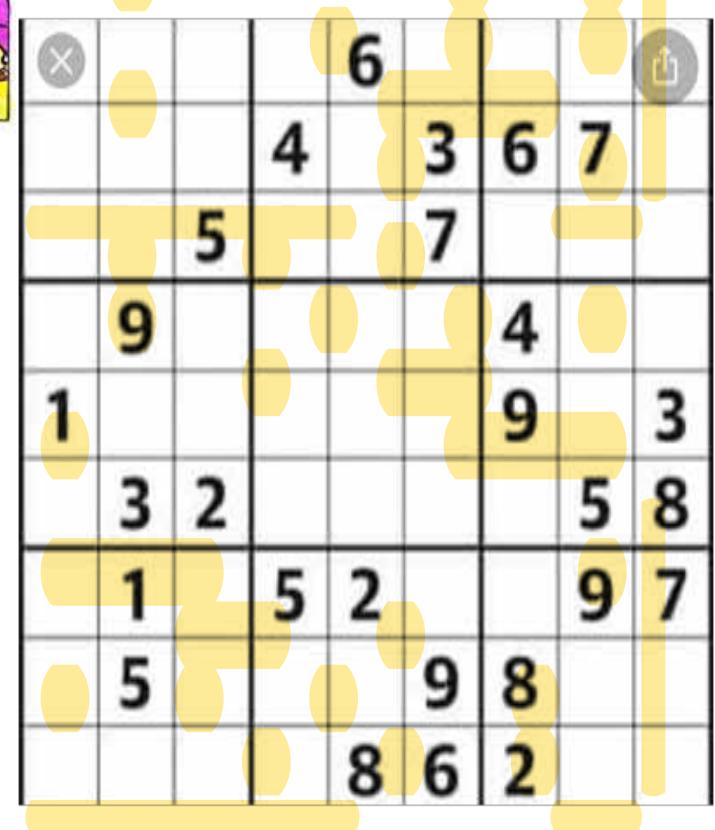
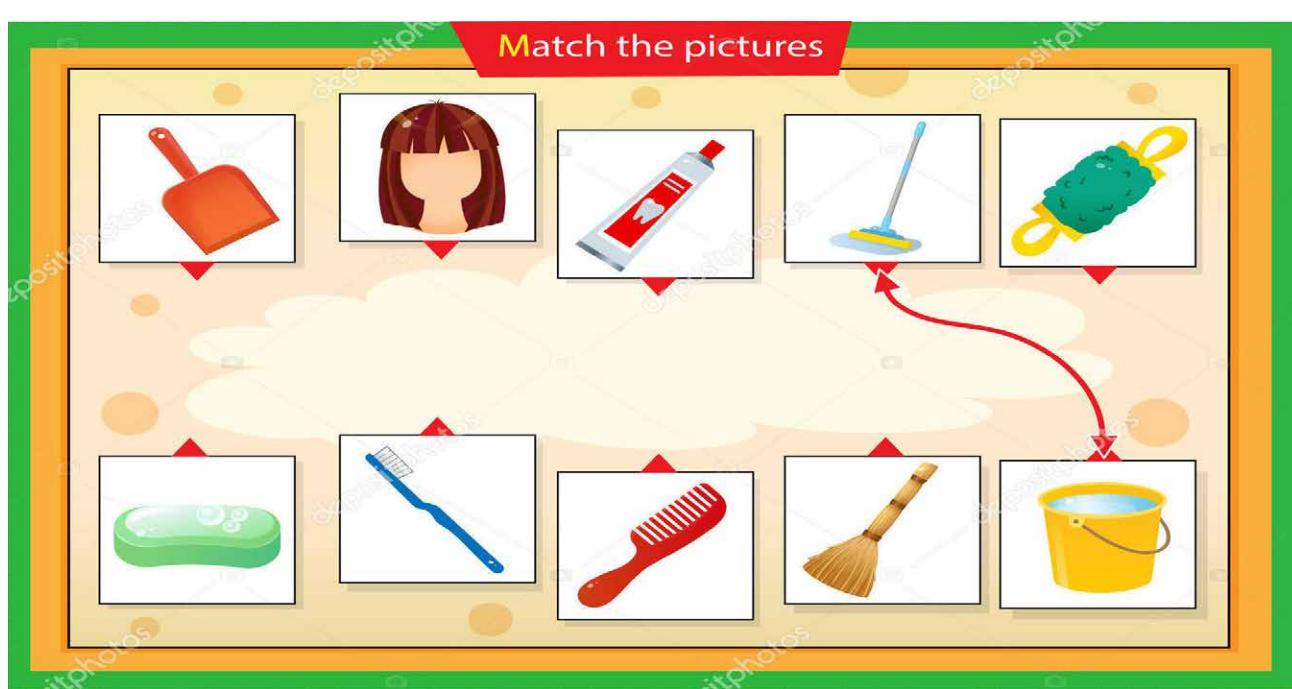


cgrj D; k & vWykbu ; k vkJykbu

खुशी — कक्षा 9वीं

मेरा नाम खुशी है। मैं 9वीं कक्षा कि क्षात्रा हूँ। मैं आपको अपनी पढ़ाई के विषय में बताना चाहती हूँ। आजकल हम सब बच्चों कि ऑनलाइन पढ़ाई चल रही हैं। ताकि हम सब सुरक्षित तरीके से अपनी पढ़ाई पूरी कर सकें। हम सब बच्चे पहले स्कूल जाकर पढ़ते थे। दोस्तों के साथ खेलते थे। इससे हमारा शारिरिक विकास भी होता था। कोरोना वायरस कि वजह से हम घर में पढ़ाई करने के लिए सीमित हो गये हैं। अब ऑनलाइन ही टेस्ट होते हैं और ऑनलाईन ही परिक्षा होती है। इस महामारी में हमको हिम्मत नहीं हारनी चाहीए और सारी सावधानीयां बरतनी चाहिए ताकि जल्द से जल्द इस महामारी से छुटकारा मिल सकें।





आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं

अगर आपकी उम्र 9 से 16 वर्ष के बीच हैं तो आप भी बाल पत्रकार बन सकते हैं।

अगर आप बाल पत्रकार के रूप में अपने आस-पास घट रही घटनाओं को इस अखबार के माध्यम से उठाना चाहते हैं तो आपका स्वागत है।

आप बच्चों से जुड़े किसी भी मुद्रदे पर अपने विचार, लेख, फोटो, चित्र आदि इसमें छापने को भेज सकते हैं शर्त बस इतनी है कि यह आपकी अपनी रचना होनी चाहिए। यह अखबार आपकी राय को दूर-दराज इलाकों तक पहुंचाने की पूरी-पूरी कोषिष्ठ करेगा।

आप अपनी रचना हमें लिखकर भेजें और जहाँ भी जरूरत हो संदर्भ का उल्लेख जरूर करें। आप अपनी रचना के साथ अपना नाम, उम्र, स्कूल/संस्था, पूरा पता फॉन नम्बर आदि जरूर भेजें।

हमारा पता : संपादक मंडल, दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम्स, द्वारा बटरफ्लाइज़,
यू - 4 ग्रीन पार्क एक्स्टेंशन, नई दिल्ली - 110016

पुरस्कार : तीन सबसे अच्छी रचनाओं को आकर्षक पुरस्कार दिए जाएंगे



यह अखबार 9 से 16 वर्ष की उम्र के बच्चों द्वारा लिखित, संपादित एवं प्रकाशित है। इसका उद्देश्य दिल्ली एवं इसके आसपास के इलाकों को बच्चों के लिए सुरक्षित एवं दोस्ताना बनाना है। यह अखबार दिल्ली बाल अधिकार क्लब द्वारा बटरफ्लाइज़ के सहयोग से प्रकाशित किया जा रहा है।

दिल्ली बाल अधिकार क्लब C/O बटरफ्लाइज़, यू - 4, ग्रीन पार्क एक्स्टेंशन नई दिल्ली - 110016,

भारत फोन : 011-26163935, 26191063, फैक्स : 011-26196117 E-mail : butterflies@vsnl.com

परियोजना सहायता : Misereor Katholische Zentralstelle, Furenwicklungshilfe.V. Germany

केवल निजी वितरण के लिए

सहयोग राशि: 5 रुपये

दिल्ली चिल्ड्रेन्स टाइम

संपादकीय दल

- उद्यान केयर

- अंगजा फार्मडेशन

- आलंब

- उधान केयर

- सलाम बालक ट्रस्ट

- वाई-डब्ल्यू सी.ए.आर.डी.पी.

- बटरफ्लाइज़

- बाल सहयोग

- कास्प दिल्ली यूनिट

- उद्यान केयर

- सलाम बालक ट्रस्ट

- वाई डब्ल्यू सी. ए. दिल्ली

(आर.डी.पी.)

- बटरफ्लाइज़

- बाल सहयोग

- बाल सहयोग

- बटरफ्लाइज़

व्यस्क संपादकीय सलाहकार

मुसुमी बरुआ

